डॉ० शिप्रा प्रभा
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
मगध महिला कॉलेज,पटना
email- gyanshipra31@gmail.com

अलंकार–परिचय

अलंकार दो शब्दों से बना है – अलम् और कार। अलम् का अर्थ है भूषण। अतः जो भूषित या अलंकृत करे वह अलंकार है। अलंकार का साधारण अर्थ है– आभूषण।

जिस प्रकार आभूषण धारण करने से नारी की शोभा बढ़ जाती है उसी प्रकार काव्य में अलंकार के प्रयोग से काव्य की शोभा बढ़ जाती है। आचार्य दण्डी ने कहा है – 'काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।' अर्थात शब्द और अर्थ की शोभा बढ़ानेवाले धर्म को अलंकार कहते है। आचार्य वामन ने गुणों को काव्य की शोभा करने वाले कहा है और अंलकारों को उस शोभा का उद्दीपक–

'काव्यशोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः।

तदतिशयहेतवस्त्वलंकाराः ।।

अतः शब्द और अर्थ के विशेष प्रयोग से जब काव्य का सौन्दर्य बढ़ाने हेतु चमत्कार उपस्थित होता है तो वह अलंकार है।

पाठ्यक्रमानुसार निम्नलिखित अंलकारों का अध्ययन अपेक्षित है:–

यमक :– 'यमक' शब्द का अर्थ है – दो। भिन्नार्थ अथवा निरर्थक स्वर–व्यजंन समुदाय की आवृत्ति को यमक कहते हैं।

अर्थात् एक शब्द जब एक से अधिक बार पद में प्रयुक्त हो और उनके अर्थों में भिन्नता हो, तो वहाँ यमक अलंकार होता है।

उदाहरण :–

कनक कनक ते सौगुनो, मादकता अधिकायि।

इहि खायिहि बौरात नर, उहि पायहि बौरायि।।

कवि का कथन है कि 'कनक' अर्थात् 'धतूरा' से 'कनक' अर्थात् 'सोना' में अधिक मादकता है क्योंकि धतूरा खाकर मनुष्य उन्मत्त हो जाता है लेकिन सोना को तो पाते ही वह उन्मत्त हो जाता है। यहाँ प्रथम 'कनक' का अर्थ 'धतूरा' और द्वितीय 'कनक' का अर्थ 'सोना' है। 'कनक' शब्द की आवृत्ति

और उनके अर्थों में भिन्नता के कारण ही उपर्युक्त दोहे में यमक अलंकार है।

<u>उपमा</u> :– भिन्न पदार्थों के सादृश्य–प्रतिपादन को उपमा कहते है। 'उपमा' का अर्थ है – समीप से देखना या तौलना। (उप – समीप से, मा – देखना या तौलना)

अर्थात् दो वस्तुओं में जब समानधर्म का प्रतिपादन किया जाता है तो वहाँ उपमा अलंकार होता है।

इसके चार अंग है –

उपमेय – जिसकी उपमा दी जाए या जिसकी तुलना की जाए।

उपमान – जिससे उपमा दी जाए या जिससे तुलना की जाए।

साधारण धर्म – वह गुण या विशेषता जो उपमेय और उपमान दोनों में पायी जाए।

सादृश्यवाचक – उपमेय और उपमान के बीच समता बताने वाला शब्द। यथा – सा, ऐसा, जैसा, समान, सदृश इत्यादि।

उदाहरण :–

सागर–सा गंभीर हृदय हो,

गिरि–सा ऊँचा हो जिसका मन।

इन पंक्तियों में हृदय की तुलना सागर से और मन की तुलना पर्वत से की गई है। हृदय को सागर के समान गंभीर और मन को पर्वत के समान ऊँचा कहा गया है।

उपमेय – हृदय और मन

उपमान – सागर और गिरि

साधरण धर्म – गंभीर और ऊँचा

सादृश्यवाचक – सा

रूपक – उपमेय में उपमान का निषेध रहित आरोप रूपक है। आरोप का अर्थ है एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु को इस प्रकार रखना कि दोनों अभिन्न मालूम हो।

अर्थात् जब उपमेय और उपमान में कोई भेद न हो तब वहाँ रूपक अंलकार होता है।

उदाहरण :–

बीती विभावरी जाग री।

अम्बर–पनघट में डुबो रही

तारा–घट , उषा–नागरी।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने भोर के समय का चित्रण किया है। कवि कथन है कि रात्रि का समय बीत गया है उषा रूपी सुंदर स्त्री तारे रूपी घड़े को आकाश रूपी पनघट में डुबो रही है अर्थात् रात बीतने के साथ आसमान के तारे छिप रहे है और भोर का आगमन हो रहा है। इन पंक्तियों में 'अम्बर–पनघट' , 'तारा–घट' तथा 'उषा–नागरी' में रूपक अलंकार है।

उत्प्रेक्षा – उपमेय में उपमान की संभावना उत्प्रेक्षा अंलकार है। उत्प्रेक्षा का अर्थ है– उत्कट रूप से उपमान को देखना। देखना का अर्थ यहाँ संभावना करने से है।

अर्थात् जहाँ उपमेय (प्रस्तुत) में उपमान (अप्रस्तुत) की कल्पित संभावना दृष्टिगोचर होती है वहाँ उत्प्रेक्षा अंलकार होता है।

उदाहरण :–

कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।

हिम के कणों से पूर्ण मानों हो गए पंकज नए।।

इन पंक्तियों में कवि ने उत्तरा के अश्रुपूर्ण नेत्रों का वर्णन किया है। अपनी बात कहते हुए उत्तरा की आँखों में आँसु आ जाते हैं। उसके अश्रुपूर्ण नेत्र ऐसे लगते है मानों कमल के पुष्प हिम के कणों से पूर्ण हो गए हो। यहाँ उत्तरा के अश्रुपूर्ण नेत्रों में हिम के कणों से पूर्ण कमल के पुष्प की संभावना कल्पित की गयी है, अतः इन पंक्तियों में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

भ्रान्तिमान : सादृश्य के कारण एक वस्तु को दूसरी वस्तु मान लेना भ्रान्तिमान है। भ्रान्तिमान का अर्थ है – धोखे से युक्त भ्रम (ज्ञान)।

अर्थात् जहाँ समानता के कारण एक वस्तु में दूसरी वस्तु का भ्रम उत्पन्न हो वहाँ भ्रान्तिमान अंलकार होता है।

उदाहरण :–

जानि स्याम घन स्याम को, नाच उठे वन–मोर।

यहाँ श्री कृष्ण के सांवलेपन के कारण उनको देखकर वन के मोरों को काले बादल के होने का भ्रम होता है और वे वर्षा–आगमन की प्रतिक्षा में प्रसन्नता से नाचने लगते हैं। इन पंक्तियों में श्रीकृष्ण में बादल का भ्रम होता है , अतः यहाँ भ्रान्तिमान अंलकार है।

श्लेष : श्लिष्ट पदों से अनेक अर्थों का कथन श्लेष अंलकार है। श्लिष्ट शब्द का अर्थ है – ऐसा शब्द जिसमें अनेक अर्थ मिले हुए या चिपके हुए हों।

अर्थात् जब एक ही शब्द में कई कई अर्थ सन्निहित होते है, तो वहाँ श्लेष अंलकार होता है।

उदाहरण –

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न उबरे मोती, मानुस, चून।।

रहीम का कथन है मोती, मनुष्य और चूने का पानी के बिना कोई महत्त्व नहीं है। यहाँ मोती, मनुष्य और चूने के संदर्भ में पानी का अर्थ भिन्न–भिन्न है। मोती के संदर्भ में पानी का अर्थ चमक, मनुष्य के संदर्भ में प्रतिष्ठा, चूना के संदर्भ में पानी है। अतः यहाँ श्लेष अलंकार है।

असंगति : कारण कहीं (अन्यत्र) और कार्य कहीं (अन्यत्र) हो तो असंगति अलंकार होता है। असंगति का अर्थ है – साथ न होना।

अर्थात् जहाँ कारण और कार्य अलग–अलग हो, वहाँ असंगति अलंकार होता है।

उदाहरण –

मेरे जीवन की उलझन, बिखरी थी उनकी अलकें।
पी ली मधु मदिरा किसने, थीं बंद हमारी पलकें।।

इन पंक्तियों में उलझन किसी और के जीवन में है और अलकें बिखरी हैं किसी और की; मदिरा का पान किसी और ने किया है नशा चढ़ा है किसी और को। कारण और कार्य अलग–अलग होने के कारण यहाँ असंगति अलंकार है।

विरोधाभास : दो वस्तुओं में वस्तुतः विरोध न रहने पर भी विरोध की प्रतीति विरोधाभास अलंकार है। विरोधाभास का अर्थ है – विरोध का आभास होना।

अर्थात् जहाँ विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास दिखलाया जाता है वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

उदाहरण –

तुम पत्थर नहीं, कुसुम हो,

तुम वज्र नहीं, नवनीत हो।

इन पंक्तियों में पत्थर को कुसुम और वज्र को नवनीत कहा गया है, अतः यहाँ विरोधाभास अलंकार है।

अतिश्योक्ति : उपमेय को छिपाकर उपमान के साथ उसकी अभेदप्रतीति कराना अतिश्योक्ति है। अतिश्योक्ति का अर्थ है – अतिश्य उक्ति।

अर्थात् जहाँ बढ़ा–चढ़ा कर वर्णन किया जाये वहाँ अतिश्योक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण –

पड़ी अचानक नदी अपार

घोड़ा कैसे उतरे पार ?

राणा ने सोचा इस पार

तब तक चेतक था उस पार।

यहाँ कवि कथन है कि अचानक नदी के सामने आ जाने के कारण राणा सोच में पड़ जाते है कि घोड़ा उस पार कैसे जएगा तब तक चेतक उस पार चला जाता है। यहाँ एक क्षण में ही चेतक के नदी पार करने का वर्णन है, अतः यहाँ अतिश्योक्ति अलंकार है।

विभावना : कारण के अभाव में कार्य की उत्पत्ति का वर्णन विभावना अलंकार है। विभावना का अर्थ है – विशिष्ट कल्पना।

अर्थात् जहाँ विशिष्ट कल्पना द्वारा बिना कारण के ही कार्य के होने का वर्णन हो, वहाँ विभावना अलंकार होता है।

उदाहरण –

बिनु पग चलै सुनै बिनु काना। कर बिनु कर्म करै विधि नाना।।

आनन रहित सकल रस भोगी। बिन बानी बकता बड़ जोगी।।

रामचरितमानस की इन पंक्तियों में ब्रह्म के स्वरूप का चित्रण किया गया है। ईश्वर बिना पग के ही गमन करते हैं, बिना कान के सबकुछ सुनते हैं, बिना हाथ के ही अनेक कर्म करते हैं, आनन रहित होने पर भी सभी रसों का पान करते हैं और वाणी न होने पर भी सबसे बड़े वक्ता हैं। इन पंक्तियों में विभावना अलंकार है।

सहायक पुस्तक :–

काव्य के तत्त्व – देवेन्द्रनाथ शर्मा